श्री सूरज वाणी

(1)

एक बैठा निर्वाण है,
एक देख के दिखा रहा है ।
एक बोल बोल के थक हार गया,
अब मिलने को बेकरार है ।।

(2)

मैं ही भुलाता हूँ,
मैं ही भटकाता हूँ,
मैं ही राह में लाता हूँ ।
मैं ही राह दिखाकर,
मेरा ही नाम जपाकर,
मुझमें मिलाता हूँ ।।

Shree Suraj Vani. www.shreesuraj.com. Copyright ©2016 Shree Suraj Trust

(3)

मेरा रूप जानना अति कठिन है,
उससे कठिन है लीला ।
रूप और लीला से जो पार पाया,
वही सूरज से मिला ।।

(4)

जान के अनजान बन गया हूँ,
क्योंकि तेरा मेहमान बन गया हूँ,
पहले तो नफरत थी जहाँ से मुझे,
अब मेहरबान बन गया हूँ ।

(5)

सच्चाई छुप नहीं सकती,
झूठ टिक नहीं सकती ।

Shree Suraj Vani. www.shreesuraj.com. Copyright ©2016 Shree Suraj Trust

(6)

जब किसी को
मेरे पास आना होता है,
तब कोई न कोई बहाना होता है,
और उसी बहाने के जरीये,
बन्दों का आना जाना होता है,
और उनमें से – कोई कोई
बन्दा मेरा दीवाना होता है ।

(7)

सर झुकाओ, तो नजाकत होगी,
आज तक जो ख्वाब है,
हकीकत होगी ।

Shree Suraj Vani. www.shreesuraj.com. Copyright ©2016 Shree Suraj Trust

(8)

मन्दिर के अन्दर एक मन्दिर है

उसमें एक मन्दिर है

उसमें जो मूरत है

वही तेरा सच्चा सूरत है ।

(9)

मन्दिर पर सन्देह करके

मूरत से न वंचित होना ।

और शरीर पर सन्देह करके,

उसमें जो शाश्वत विराजमान है

उससे न वंचित होना ।।

Shree Suraj Vani. www.shreesuraj.com. Copyright ©2016 Shree Suraj Trust

(10)

मन्दिर तो सब ने देखा,
पर मूरत किसी ने नहीं।
शरीर तो सब ने देखा,
पर सूरत किसी ने नहीं।
याद रख ऐ बन्दे,
जिस दिन शरीर में सूरत नजर आएगी,
उस दिन मन्दिर में मूरत नजर आएगी ।।

(11)

तुम जो हो, जैसे हो, मेरे हो,
चाहो तुम मानो या न मानो ।

Shree Suraj Vani. www.shreesuraj.com. Copyright ©2016 Shree Suraj Trust

(12)

रवि मेरी स्थिति,सोम मेरा प्रकाश
मंगल मेरी लीला ।
जाने नहीं योगी, त्यागी,ऋशि मुनी,
ज्ञानी सभी हैं उदास ।।

(13)

अरूप होते हुए भी स्वरूप हूँ,
साकार में दिखता हूँ ।
ऐ बन्दे, समझना मुश्किल है ।
तेरी सीमा जब टूटेगी
ये रहस्य असीम में
जानने के काबिल है ।।

Shree Suraj Vani. www.shreesuraj.com. Copyright ©2016 Shree Suraj Trust

(14)

मिट्टी गया मिट्टी के पास, और कहने
लगा मुझे दे दे कुछ मिट्टी,
अगर तू देगा मुझे कुछ मिट्टी
तो उसमें से तुझे दूँगा कुछ मिट्टी ।
इस तरह जब शाश्वत के पास जाकर
तूने मांगा मिट्टी क्योंकि शाश्वत को भी
तूने समझा मिट्टी,
चूंकि तूने उससे मांगी मिट्टी,
इस कारण उसने दे दी मिट्टी,
मिट्टी पाकर उसमें से तूने कुछ उसे दे
दी मिट्टी और बाकी मिट्टी को लेकर
एक दिन तू भी हो गया मिट्टी ।।

Shree Suraj Vani. www.shreesuraj.com. Copyright ©2016 Shree Suraj Trust

(15)

कैसी ये बेबूझ पागलपन है

कि जन्मों जन्मों से

तू उस अरूप को

सदगुरू में बुलाता है

और जब वो आता है,

तू लाख बहाने करके

उसे ठुकराता है ।

जब वो फिर अरूप में हो जाता है

तब तू फिर अपने को

उसका भक्त कहलाता है

जब था तो ठुकरा दिया

अब नहीं तो आँसू बहाता है ।

(16)

मैं ही मालिक, मैं ही दासा ।
जाने नहीं योगी, त्यागी, ऋशि
मुनि, भक्त, ज्ञानी
इसलिए सभी है उदासा ।।

(17)

अगर शरीर में रहा
तो जहाँ पे छा जाऊँगा
और अगर ये शरीर छीन भी गई
तो तेरे जिगर में से आवाज लगाकर
अपने में मिलाऊँगा
क्योंकि मैं था, हूँ और रहूँगा ।

Shree Suraj Vani. www.shreesuraj.com. Copyright ©2016 Shree Suraj Trust

(18)

दुर्लभ–दुर्लभ की धारणा तेरी
तुझे उस परम सुलभ से
वंचित कर दिया
वह सुलभ जब अति सुलभ बनके
तेरे द्वार पे आया

तेरी दुर्लभ की धारणा ने
फिर तुझे उस परम से
वंचित कर दिया ।
वह दुर्लभ नहीं, अति सुलभ है ।
प्रत्यक्ष है, यहाँ है ।

Shree Suraj Vani. www.shreesuraj.com. Copyright ©2016 Shree Suraj Trust

(19)

तेरे दर पे हज़ारों का
आना जाना होता है,
आना जाना तो एक बाहाना है
बाहाना होता है।
बाहाना तो एक ख्वाब है
प्यासा परवाना होता है,
और उन बन्दों में कोई कोई
तेरा दीवाना होता है।
और जो दीवाना है तेरा बन्दा
उसका छलकता हुआ पैमाना होता है ।।

Shree Suraj Vani. www.shreesuraj.com. Copyright ©2016 Shree Suraj Trust

(20)

देर से मिले पर दुरूस्त मिले,

अगर मिले तो तू मिले ।

सूना हूँ तू ही निराकार से

नराकार में आता है

अपनी मंजिल का पता बताकर

अपने में मिलाता है ।

तेरे मंजिल का पता तेरे सिवा

किसी को नहीं पता

और जब जिसे पता होता है

वो भी तू ही तू हो जाता है

देर से मिले पर दुरूस्त मिले

अगर मिले तो तू मिले ।।

Shree Suraj Vani. www.shreesuraj.com. Copyright ©2016 Shree Suraj Trust

(21)

जिसने उसे वहाँ कहा
उसने उसे खो दिया ।
जिसने उसे यहाँ जाना
उसने उस शाश्वत को पा लिया ।

Shree Suraj Vani. www.shreesuraj.com. Copyright ©2016 Shree Suraj Trust